## पद ८२

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

किति जनासी भ्रम हा झाला। मी ब्रह्म न कळे जीवाला।।धु.॥ जे सिच्चिदानंद म्हणती। ते अस्ति भाति आणि प्रीति। जन विषय हेचि अनुभविती। कल्पिती नामरूपाला।।१॥ सर्वातरी एकचि साक्षी। जो बंध मोक्ष अनुलक्षी। जो मूलाज्ञाना भक्षी। सिद्धांत पूर्वपक्षी। कोण लपवील मार्ताण्डाला।।२॥